क्लाइमेट फाइनेंस प्रोवाइडेड एंड मोबलिाइज़्ड इन 2013-2022

प्रलिमि्स के लयि:

आर्थकि सहयोग और वकिास संगठन, जलवायु वत्ति लक्ष्य, वश्वि बैंक, बहुपक्षीय वकिास बैंक, नया सामूहकि परमिाणति लक्ष्य

मेन्स के लयि:

वकिासशील देशों के लयि जलवायु वत्ति, अंतर्राष्ट्रीय जलवायु वत्ति तंत्र की प्रभावशीलता, आर्थकि वकिास और पर्यावरण की संधारणीयता

स्रोत: डाउन टू अर्थ

चर्चा में क्यों?

आर्थकि सहयोग एवं वकिास संगठन (Organisation for Economic Cooperation and Development- OECD) द्वारा जारी "**क्लाइमेट फाइनेंस प्रोवाइडेड एंड मोबलिाइज़्ड इन 2013-2022**" नामक रपिोर्ट में कहा गया है कि वर्ष 2022 में वकिसति देशों ने वकिासशील देशों के लयि जलवायु वत्ति के रूप में **100 बलियिन अमेरकिी डॉलर से अधकि की धनराशि** उपलब्ध कराई और संग्रहीत की, जबकि विगित वर्षों के दौरान ये देश ऐसा करने में असफल रहे थे।

OECD रपिोर्ट के प्रमुख नष्किर्ष क्या हैं?

- **जलवायु वत्ति लक्ष्य: वकिसति देशों ने वर्ष 2022 में वकिासशील देशों को जलवायु वत्ति के रूप में 115.9 बलियिन अमेरकिी डॉलर उपलब्ध कराए और संग्रहीत कयि। यह उपलब्धि मूल लक्ष्य वर्ष 2020 से दो वर्ष बाद प्राप्त हुई है।**
- **सार्वजनकि जलवायु वत्ति का प्रभुत्व:** वर्ष 2022 में कुल वत्तिीय प्रवाह में लगभग 80% हस्सिेदारी द्वपिक्षीय (देशों) और बहुपक्षीय स्रोतों (जैसे वश्वि बैंक) से प्राप्त सार्वजनकि जलवायु वत्ति की थी। बहुपक्षीय वकिास बैंकों (Multilateral Development Banks- MDBs) से लगभग 90% वत्तिपोषण, ऋण के रूप में प्राप्त हुआ।
    - द्वपिक्षीय स्रोतों से 41 बलियिन अमेरकिी डॉलर, जबकि बहुपक्षीय स्रोतों से 50.6 बलियिन अमेरकिी डॉलर की राशि प्राप्त हुई। वर्ष 2022 में जुटाए गए नजिी वत्ति का योगदान 21.9 बलियिन अमेरकिी डॉलर रहा।
- **वत्तिीय साधनों की प्रकृति:** सार्वजनकि जलवायु वत्ति में 70% हस्सिा ऋणों का था, जसिसे वकिासशील देशों पर ऋण के बोझ संबंधी चतिाओं में वृद्धि हुई। कुल सार्वजनकि जलवायु वत्ति का केवल 28% ही अनुदानों के रूप में प्राप्त हुआ।
- **आय स्तर के अनुसार वतिरण:** नमि्न आय वाले देशों को उनके सार्वजनकि जलवायु वत्ति का 64%, जबकि नमि्न-मध्यम आय वाले देशों को केवल 13% अनुदान के रूप में प्राप्त हुआ।
- **शमन तथा अनुकूलन के लयि वत्तिपोषण में अंतराल:** अधकिांश वत्तिपोषण **शमन प्रयासों** के लयि कयिा गया, जबकि अनुकूलन गतविधियिों को वर्ष 2022 में 32.4 बलियिन अमेरकिी डॉलर प्राप्त हुए।
- **वशिषज्ञों की चतिाएँ और सफिारशिें:** वशिषज्ञों ने जलवायु वत्ति के लयि अधकि पारदर्शी लेखापरीक्षण और स्पष्ट परभिाषा की मांग की।
    - आलोचकों का तर्क है कि ऋण पर अत्यधकि नरि्भरता जलवायु न्याय के सद्धिांतों को कमज़ोर बनाती है।
    - वकिासशील देशों को जलवायु परविर्तन से प्रभावी रूप से नपिटने के लयि **वर्ष 2030 तक प्रतविर्ष अनुमानति 1 ट्रलियिन अमेरकिी डॉलर की आवश्यकता** की तुलना में **100 बलियिन अमेरकिी डॉलर का लक्ष्य अपर्याप्त** माना जा रहा है।

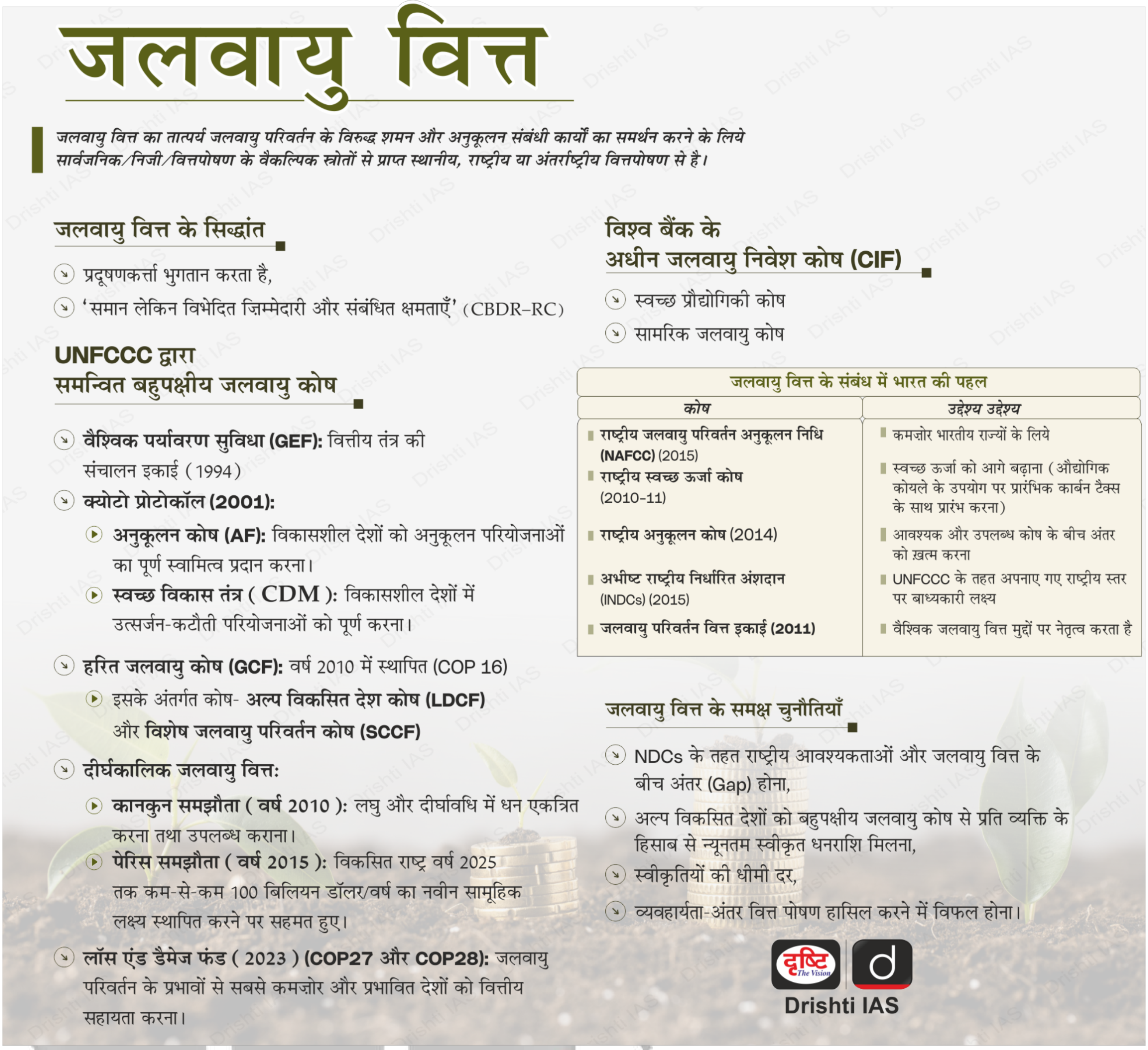

//

जलवायु वित्त लक्ष्य का भविष्य क्या है?

- जलवायु वित्त पर एक नया, अधिक महत्त्वाकांक्षी नया सामूहिक परिमाणित लक्ष्य (New Collective Quantified Goal- NCQG) स्थापित करने के लिये वार्ता जारी रही है। नवंबर 2024 में बाकू, अज़रबैजान में COP29 शिखर सम्मेलन में इसे अपनाए जाने की आशा है।
  - NCQG के तहत **वर्ष 2025 के बाद से विकासशील देशों को जलवायु वित्त प्रदान करने के लिये विकसित देशों को अनिवार्य रूप से बैठक** करनी होगी और यह वर्ष 2015 के पेरिस समझौते का स्थान लेगा।
- संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन (UN Climate Change) द्वारा वर्ष 2021 में प्रस्तुत एक रिपोर्ट में अनुमान व्यक्त किया गया है कि विकासशील देशों को अपनी जलवायु कार्य योजनाओं को लागू करने के लिये **वर्ष 2030 तक सालाना लगभग 6 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर की आवश्यकता** होगी।
  - भारत ने विकसित देशों से आग्रह किया है कि वे ग्लोबल वार्मिंग की समस्या से निपटने के लिये **वर्ष 2025 से विकासशील देशों को प्रति वर्ष कम-से-कम 1 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर का जलवायु वित्त उपलब्ध कराएँ**।

भारत की जलवायु परिच्छेदिका/प्रोफाइल

क्षेत्रवार योगदान

- **प्रमुख उत्सर्जक क्षेत्र:** ऊर्जा, परिवहन, निर्माण

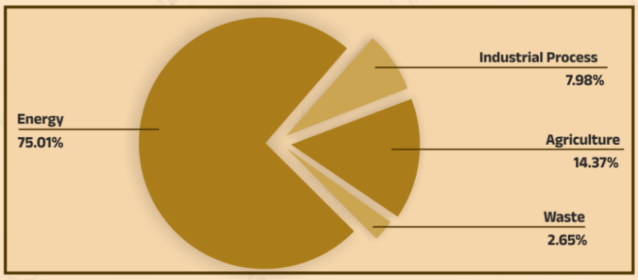

- **प्रमुख जलवायु जोखिम:** बाढ़, सूखा, हीटवेव, कोल्डवेव और चक्रवात
- **कमज़ोर क्षेत्र:** कृषि और खाद्य, जल, तटीय, स्वास्थ्य, वन और अन्य प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र

जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिये प्रमुख पहल

- **राष्ट्रीय नीतिगत ढाँचा**
  - जलवायु परिवर्तन पर राष्ट्रीय कार्य योजना (NAPCC)
  - जलवायु परिवर्तन पर राज्य कार्य योजना (SAPCC)
- **भारत का अद्यतन राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान (वर्ष 2022)**
  - 'जीवन' के लिये जन आंदोलन - 'पर्यावरण के लिये जीवन शैली'
  - आर्थिक विकास हेतु जलवायु-अनुकूल और स्वच्छ मार्ग अपनाना
  - वर्ष 2005 के स्तर की तुलना में वर्ष 2030 तक सकल घरेलू उत्पाद की उत्सर्जन तीव्रता में 45% की कमी, वर्ष 2070 तक शुद्ध-शून्य उत्सर्जन का लक्ष्य
  - वर्ष 2030 तक गैर-जीवाश्म ईंधन-आधारित ऊर्जा संसाधनों से 50% संचयी विद्युत ऊर्जा स्थापित क्षमता
  - 2.5 से 3 बिलियन टन CO_2 का अतिरिक्त कार्बन सिंक
  - विशिष्ट क्षेत्र में निवेश बढ़ाकर जलवायु परिवर्तन को बेहतर ढंग से अपनाना
  - घरेलू और नई एवं अतिरिक्त निधियाँ एकत्रित करना
  - क्षमताओं का निर्माण करना, घरेलू ढाँचा और अंतर्राष्ट्रीय वास्तुकला तैयार करना
- **अंतर्राष्ट्रीय जलवायु वार्ता - UNFCCC (1994) कन्वेंशन और समझौते**
  - पेरिस समझौता (2015)
  - क्योटो प्रोटोकॉल (2005)

द्विपक्षीय और बहुपक्षीय सहयोग

द्विपक्षीय परियोजनाएँ

- **ड्यूश गेसेलशाफ्टफ्यूर इंटरनेशनेल ज़ुसामेनरबीट (GIZ) GmbH (जर्मनी)**
  - ग्रामीण भारत में जलवायु अनुकूलन और वित्त (CAFRI) (वर्ष 2020-2023)
  - राष्ट्रीय स्तर पर उपयुक्त शमन कार्रवाई (NAMAs) (वर्ष 2007)
  - ग्लोबल कार्बन मार्केट (GCM) (वर्ष 1997)
  - जलवायु परिवर्तन अध्ययन और कार्रवाई पर क्षमताओं का संस्थागतकरण (ICCC)
- **यूरोपीय संघ (EU)**
  - पेरिस समझौते के कार्यान्वयन के लिये रणनीतिक साझेदारी (SPIPA) (वर्ष 2018-2022)
  - इको-सिटीज़ के लिये स्वच्छ प्रौद्योगिकियाँ और ऊर्जा दक्षता

बहुपक्षीय परियोजनाएँ

- **संयुक्त राष्ट्र महासचिव (UNSG) जलवायु कार्रवाई शिखर सम्मेलन (वर्ष 2019)**
- **अनुकूलन पर वैश्विक आयोग (GCA) (2018)**
- **UNDP:** राज्य-स्तरीय जलवायु परिवर्तन कार्रवाई के प्रभावी कार्यान्वयन हेतु बाज़ार परिवर्तन और बाधाओं को दूर करना

Drishti IAS

आर्थिक सहयोग एवं विकास संगठन (OECD):

- OECD **38 लोकतांत्रिक देशों** का एक अंतर्राष्ट्रीय संगठन है, जो बाज़ार अर्थव्यवस्था के लिये प्रतिबद्ध है।
- इसकी स्थापना वर्ष 1960 में 18 यूरोपीय देशों, संयुक्त राज्य अमेरिका और कनाडा द्वारा की गई थी, तथा इसका **मुख्यालय पेरिस, फ्राँस में** है।
- OECD का लक्ष्य ऐसी नीतियों को आकार देना है जो सभी के लिये समृद्धि, समानता, अवसर और कल्याण को बढ़ावा दें। यह आर्थिक रिपोर्ट, सांख्यिकीय डेटाबेस, विश्लेषण और वैश्विक आर्थिक विकास पर पूर्वानुमान प्रस्तुत करता है।
- यह विश्व भर में रिश्वतखोरी और वित्तीय अपराध को समाप्त करने की दिशा में भी कार्य करता है तथा असहयोगी**टैक्स हैवन देशों** की **"ब्लैक लिस्ट"** को भी प्रबंधित करता है।
- OECD के अपने सदस्य देशों के अतिरिक्त **भारत जैसी गैर-सदस्य अर्थव्यवस्थाओं के साथ भी कार्यकारी संबंध** रखता है।

??????? ?????? ???????:

प्रश्न. चर्चा कीजिये कि वैश्विक तापमान वृद्धि को रोकने और जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न होने वाले मुद्दों को कम करने के लिये पेरिस समझौते द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को पूरा करने की दिशा में विश्व की पहुँच कहाँ तक है?

और पढ़ें: क्लाइमेट फाइनेंस रोड से COP29 तक, भारत की जलवायु प्रोफाइल (भाग - II)

UPSC सिविल सेवा परीक्षा, विगत वर्ष के प्रश्न

??????????:

प्रश्न. वर्ष 2015 में पेरिस में UNFCCC बैठक में हुए समझौते के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं? (2016)

1. इस समझौते पर UN के सभी सदस्य देशों ने हस्ताक्षर किये और यह वर्ष 2017 से लागू होगा।
2. यह समझौता ग्रीनहाउस गैस के उत्सर्जन को सीमित करने का लक्ष्य रखता है जिससे इस सदी के अंत तक औसत वैश्विक तापमान की वृद्धि उद्योग-पूर्व स्तर (pre-industrial levels) से 2 डिग्री सेल्सियस या कोशिश करें कि 1.5 डिग्री सेल्सियस से भी अधिक न होने पाए।
3. विकसित देशों ने वैश्विक तापन में अपनी ऐतिहासिक जिम्मेदारी को स्वीकारा और जलवायु परिवर्तन का सामना करने के लिये विकासशील देशों की सहायता के लिये 2020 से प्रतिवर्ष 1000 अरब डॉलर देने की प्रतिबद्धता जताई।

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये:

(a) केवल 1 और 3
(b) केवल 2
(c) केवल 2 और 3
(d) 1, 2 और 3

उत्तर: (b)

?????:

प्रश्न. संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन ऑन क्लाइमेट चेंज (UNFCCC) के पक्षकारों के सम्मेलन (COP) के 26वें सत्र के प्रमुख परिणामों का वर्णन कीजिये। इस सम्मेलन में भारत द्वारा की गई प्रतिबद्धताएँ क्या हैं? (2021)

प्रश्न. नवंबर, 2021 में ग्लासगो में विश्व के नेताओं के शिखर सम्मेलन में सी.ओ.पी. 26 संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन सम्मेलन में, आरंभ की गई हरित ग्रिड पहल का प्रयोजन स्पष्ट कीजिये। अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (आई.एस.ए.) में यह विचार पहली बार कब दिया गया था? (2021)

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/paris-agreement-climate-finance-target-for-2022